नयन नहीं अभिराम

कवि विनोद सिंह गुर्जर
महू, इंदौर, मध्य प्रदेश
मो॰ 9977110561

ताल में जल नहीं,
पंक भी सूखा,
पंकज लुप्त हुये।
भेंट चढ़े कई सुमन
अधखिले,
कूप भी शुष्क हुये।

अबकी गर्मी कहर ढा रही,
नयन नहीं अभिराम।
कहाँ छुपे अब दर्श दिखाओ,
ओ मेरे घनश्याम ॥

पात-पात झुलसे वृक्षों के,
तने भी ठूंठ हुये।
सदाबहार कानन, सावन के,
सपने झूठ हुये ॥

धधक उठी ज्वाला भू पर,
किसने ये खेल रचा।
खेत - खेत् के अधर प्यासे,
अब कोहराम मचा ॥

नीड़ों में मृत्यु का नर्तन,

कलरव खा गई घाम ॥...
कहाँ छुपे अब दर्श दिखाओ,
ओ मेरे घनश्याम ॥ ....

कोयलिया अमराई पर,
गान सुनाती थी।
और चातक की प्यास दिवानी,
बरखा लाती थी।

आशायें अब हुई परांई,
मतलब के यार हुये।
प्रकृति मानव दोनों में,
अनुबंध हजार हुये।

स्वा२थ में अंधा जीवन है,
और बहरे हैं कान । ...

कहाँ छुपे अब दर्श दिखाओ,
ओ मेरे घनश्याम ॥ ....